Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January 2024 5(1), 1953–1955

21 वीं सदी में मूल्य शिक्षा का तात्पर्य, महत्व, शिक्षकों की भूमिका, सूझाव एवं चूनौतियों।

मुरारी कुमार[1], डॉ. राम कुमार पाठक[2]

[1] शोधकर्त्ता, मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवांन, अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)
[2] शोध निर्देशक, (एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र), मंगलायतन विश्वविद्यालय बेसवांन, अलीगढ़ (उत्तर-प्रदेश)

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.4700

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

मूल्य ज्ञान की वो पूँजी है जिसके आधार पर, भारतीय संस्कृति आधारित है। मूल्य मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। यह मानव अस्तित्व के लिए अति. आवश्यक है। यह एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुणों का समावेशन है जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली तथा विश्वसनीय बनकर उभरता है। मूल्य में मानव की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति एवं आस्था आदि निहित होते है। मूल्यवान एवं मूल्यहीन होना ही प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता एवं उपयोगहीनता को सिद्ध करता है। मूल्य के महत्व को प्रत्येक अवस्था में स्वीकार किया जाता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है उसके मूल्य उनके गुण उसकी सत्प्रवृत्तियाँ ही उसे पशु-पक्षी से भिन्न बनाते है। जिस प्रकार जल के बिना मछली, आला के बिना सरीर व भाषा के बिना मनोगत भाव महत्वहीन है उसी प्रकार मूल्यों के बिना जीवन अर्थहीन है। मूल्य शिक्षा ही हमारे अंदर न्याय, परोपकार, दया, सहानुभूति, ईमानदारी, परस्पर सद्भाव इत्यादि जीवन के मूल्य सीखाते है।

1. मूल्य शिक्षा का ताप्पर्य

मूल्य ज्ञान की वो पूँजी है जिसके आधार पर, भारतीय संस्कृति आधारित है। मूल्य मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। यह मानव अस्तित्व के लिए अति. आवश्यक है। यह एक ऐसी आचरण संहिता या सद्गुणों का समावेशन है जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली तथा विश्वसनीय बनकर उभरता है। मूल्य में मानव की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति एवं आस्था आदि निहित होते है। मूल्यवान एवं मूल्यहीन होना ही प्रत्येक वस्तु की उपयोगिता एवं उपयोगहीनता को सिद्ध करता है। मूल्य के महत्व को प्रत्येक अवस्था में स्वीकार किया जाता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है उसके मूल्य उनके गुण उसकी सत्प्रवृत्तियाँ ही उसे पशु-पक्षी से भिन्न बनाते है। जिस प्रकार जल के बिना मछली, आला के बिना सरीर व भाषा के बिना मनोगत भाव महत्वहीन है उसी प्रकार मूल्यों के बिना जीवन अर्थहीन है। मूल्य शिक्षा ही हमारे अंदर न्याय, परोपकार, दया, सहानुभूति, ईमानदारी, परस्पर सद्भाव इत्यादि जीवन के मूल्य सीखाते है।

2. 21 वीं सदी में मूल्य शिक्षा का महत्व

मूल्य शिक्षा को एक अलग अनुशासन के रूप मैं नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि इसे शिक्षा प्रणाली के अंदर शामिल करके देखा जाना चाहिए। इसे केवल समस्याओं को हल करने के लिए नहीं अपितु एक सभ्य मानव समाज के निर्माण के रूप में भी देखा जाना चाहिए। मूल्य शिक्षा का जो स्पष्ट लक्ष्य है उसके बारे में भी चिंतन करना चाहिए। 21 वीं सदी में मूल्य शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाले प्रमुख बिंदु इस प्रकार दिए गए है:-

- मूल्य शिक्षा हमें कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने में मदद करता है जिससे छात्रों में निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है।
- उम्र के साथ जिम्मेदारियों की एक विस्तृत श्रृंखला आती है इससे कई बार छात्रों के मन में अर्थहीन भावना विकसित होती है और, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकारों, करियर संकट और किसी के जीवन के साथ बढ़ते असंतोष को जन्म दे सकता है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य लोगों के जीवन में तार्किकता और संतोष को पैदा करना है।
- मूल्य शिक्षा का महत्व जिज्ञासा जगाने और मूल्यों के हितों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह जीवन के कौशल विकास में मदद करती है।
- जब लोग समाज और उनके जीवन में मूल्य शिक्षा का अध्ययन करते हैं तो वे अपने लक्ष्यों और समर्पण में उत्साहित महसूस करते हैं। इससे जागरूकता का विकास होता है जिसके परिणामस्वरूप विचारशील पूर्ण निर्णय लेने में आसानी हेतु है।
- समकालीन समाज में मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुणा बढ़ गया है। हमारे लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मूल्य शिक्षा एक बही की स्कूली यात्रा में शामिल है उसके बाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ-साथ नैतिकता को भी आत्मसात करें।
- मूल्य शिक्षा बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं के संदर्भ में बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है।
- सहनशीलता और विभिन्न संस्कृतियों और धार्मिक विश्वास के प्रति सम्मान के महत्व के साथ छात्रों को जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

3. मूल्य शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका

मूल्य शिक्षा में एक शिक्षक की भूमिका अनंत और सराहनीय है। माता-पिता के बाद भारतीय समाज में गुरु को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरु अर्थात् शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थियों को एक बर्तन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है। गुरु किसी भी छात्र को ऐसी शिक्षा देकर एक बेहतर, मनुष्य बना देता है। एक शिक्षक ही छात्रों को समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही से अवगत कराता है। शिक्षक समाज का नेतृत्व करता है। जो छात्रों को विभिन्न विषयों की शिक्षा देता है। शिक्षक की महत्ता समाज के लिए अनमोल है। वो छात्रों को मूल्य शिक्षा प्रदान करते हुए उनके अंदर, मानसिक भावात्मक शारीरिक और सामाजिक आदि भावों का विकास करता है। छात्रों अनुशासित करते है उनके अंदर देशभक्ति, बलिदान, त्याग, परोपकार, परस्पर समर्पण, पारस्परिक सद्भाव, ईमानदारी, दया, दान इत्यादि मूल्यों का समावेशन करता है। बच्चों का व्यक्तिगत ज्ञान रखते हुए उनकी समस्याओं का समाधान. करता है। वो छात्रों को समाज के लिए एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करते है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों को सामाजिक और नैतिक मूल्य सिखाते है। है। यह समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के माध्यम से वे उन्हें सामाजिक और नैतिक मूल्यों की सीख देते है जो समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों को सही मार्गदर्शन प्रदान करता है जो उन्हें संगठित रहते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रोत्साहित करता है। शिक्षकों की भूमिका छात्रों को ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक और नैतिक मूल्यों का भी ज्ञान देने की होती है। वे वर्ग के समग्र विकास में मदद करते हैं। जो समाज के लिए एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर होते हैं। आधुनिक युग में शिक्षकों को अपने छात्रों को न केवल विषय का ज्ञान से परिचित कराना होता है बल्कि उन्हें जीवन से जुड़ी कौशलों और उनके सामाजिक और व्यक्तिगत विकास के लिए भी तैयार करना होता है। शिक्षकों की भूमिका केवल छात्रों को सिखाने से सीमित नहीं होती है। शिक्षकों को स्कूल के बाहर भी अपनी समुदाय में और समाज के विभिन्न अंगों में एक अहम भूमिका निभानी पड़ती है। उन्हें नौजवानों के उद्यमिता और सामाजिक सेवा में भागीदारी को प्रोत्साहन देना होता है। इस आधुनिक युग में शिक्षकों की भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण है और उन्हें संभावित चुनौतियों से निपटने की क्षमता होनी चाहिए।

4. मूल्य आधारित शिक्षा के संदर्भ में सुझाव

वर्तमान की यदि बात करें तो आधुनिकरण, सामाजिक परिवर्तन, अभिभावकों की मूल्यों के प्रति उदासीनता व दूषित शिक्षा प्रणाली मूल्यों ह्रास का मुख्य कारण है। आज लोगों का विश्वास मूल्यों से उठ गया है। इसलिए शिक्षा पाठ्यक्रम में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक साधन बन सके। हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहु आयामी है इसलिए शिक्षा के मूल्यों द्वारा सार्वजनिक और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता के सूत्र में बाँध सके। आज शिक्षक. एवं अभिभावक बालकों के

मूल्य संबंधित शिक्षा के प्रति उदासीन है। शिक्षा नीति निर्धारण एवं शैक्षिक प्रशासक भी इनकी तरफ अधिक ध्यान नहीं दे रहे है। आज भारत में उपभोक्ता वाद की प्रवृत्ति अधिक बढ़ गई है जो देश के युवाओं को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। यह युवाओं के मूल्यों को खत्म कर रही है। इस गिरते हुए मूल्यों का बुरा प्रभाव हमारे देश के शैक्षिक मूल्यों पर पड़ रहा है। अतः शैक्षिक संस्थाओं का यह दायित्व है कि वे इन परिस्थितियों में अपनी बुद्धिमान पूर्ण प्रयासों के माध्यम से इससे निपटने के लिए एक सुदृढ़ रणनीति तैयार करें। मूल्यपरक शिक्षा शिक्षा को समाज में फैलाने के लिए शिक्षकों का बहुत गरिमामय योगदान रहता है।

मूल्यों के सहरी विकास के लिए शिक्षकों का आचरण उसका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि छात्र अनुकरण कर सके। शिक्षक जिन मूल्यों की अपेक्षा अपने छात्रों पे करना चाहता है वह स्वंय: उनके व्यक्तित्व में होना चाहिए। छात्र अपने शिक्षकों को अपना आदर्श मानते है वह अपने शिक्षकों में निहित मूल्यों का अनुकरण करता है। छात्रों का सर्वांगीण विकास शिक्षक पर निर्भर करता है। अतः छात्रों के अंदर मूल्यों के विकास में शिक्षक को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। विद्यालयों में था किसी भी शैक्षिक संस्था में नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए। पाठ्यक्रम का निर्माण ऐसा होना चाहिए कि छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा मिल सके। शिक्षा को मात्र सिद्धांत क्षेत्र तक सीमित न रखकर इसे सामाजिक जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। कोठारी आयोग ने (1964-1966) में यह कहा था कि " पाठचर्या में 66 एक गंभीर त्रुटि यह है कि इसमें सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को शिक्षा की व्यवस्था नहीं की गई है। हमारी सिफारिश है कि जहां तक संभव हो यह बड़े-बड़े धर्मा के नीति संबंधी उद्देश्यों की सहायता से सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को शिक्षा देने का जागरूक और संगठित प्रयास किया जाना चाहिए। जीवन मूल्य एक प्रकार के स्थायी विश्वास होते है। मूल्यों के विकास के लिए शिक्षक शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थाओं के पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए।

5. मूल्य शिक्षा में चुनौतियाँ

आज के इस आधुनिक युग में जहाँ, भौतिक जीवन व्यस्तताओं से भरा हुआ है ऐसे में छात्रों के जीवन में मूल्य शिक्षा की कमी होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लोगों में जागरूकता को घोर कमी है कई शिक्षक और छात्र शिक्षा के मूल्य को महत्व नहीं देते है। इससे मूल्य को शिक्षा जगत मैं लागू करने में दिक्कत आती है। शिक्षा, व्यवस्था में मूल्यों को शामिल करने में कई कठिनाइयां आती है। जैसे – पाठ्यक्रम में मूल्यों को शामिल कसा, शिक्षकों ने प्रशिक्षित करना और मूल्यांकन करता। कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक दबाव मूल्यों को अपनाने में बाधा डालते हैं। इस तकनीकी के युग में मूल्यों को सिखाने में बहुत सारी समस्याएँ आती है। शिक्षकों और अभिभावकों को मूल्यों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए लेकिन वे अक्सर मूल्यों को महत्व नहीं देते हैं। कुछ मूल्यों को यदि छात्राओं के बीच लागू कर दिया जाता है तो छात्रों को बहुत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज बहुत बड़े स्तर पर हमारी शिक्षा व्यवस्था का निजी करण और व्यवसायी करण हो रहा है जो मूल्यों को नजर अंदाज करते जा रहे है। विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के छात्रों के लिए मूल्यों को सिखाना एक चुनौती पूर्ण कार्य बन जाता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ यंत्र-सूची

गुप्ता, एन० एल०० (2000) - शिक्षा में मानवीय मूल्य नई दिल्ली, कैस्पैट पब्लिसिंग कंपनी।
कुमारी रतना, बी. (1998), एजुकेशन एंड वैल्यू ओरिन्टेषन, बी. पुरुनया स्वाति पब्लिकेशन, संस्करण (1998)
मेरियल डॉने एवं कीले, ए० वी० (1978), मौरल एजुकेशन थ्योरी एंड प्रैक्टिस, हार्पर एंड रॉ।
पानी, बी. के एवं सिंह, पी. वैल्यू एजुकेशन आगरा: नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन
शर्मा, एस, आर (1990) - मोरक्त एंड वैल्यू इन एजुकेशन भारत :- कोसमोस पब्लिकेशन
उषा राज नेगी (2005), वैल्यू एजुकेशन इन इंडिया नई दिल्ली : भारतीय
यूनिवर्सिटी संघ द्वारा प्रकाशित ए आई यू भवन (पुनमुद्रित नवम्बर 2005)
रूहेला एस०पी० (1990) इयूमन वैल्यूज हेड एजुकेशन, नई दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड ।